अध्याय : एक

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

संत शिवनारायण

भक्ति साहित्य के इतिहास में संत शिवनारायण के बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान बा । इहाँ के रचनन में ब्रह्म जीव आ माया के तात्त्विक चिंतन प्रस्तुत कइल गइल बा । उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जिलान्तर्गत चंदवार नामक गाँव में नरौनी बाघराम के घरी संवत् 1773 में इहाँ के जनम भइल रहे । शिवनारायण जी के बचपने से सामाजिक विषमता आ धार्मिक विकृति के प्रति आक्रोश भीतर भरल रहे । इहाँ के भीतर ब्रह्म दर्शन के उत्कट लालसा रहे । ओह घटी के चर्चित संत दुखहरण जी से इहाँ के दीक्षा लेलीं आ साधना के बल पर ब्रह्म जीव आ माया के विशद विवेचन कइलीं। इहाँ के पदन में भक्ति आ वैराग्य दूनो के सम्यक विवेचन कइल गइल । इहाँ के कबीरदास पलटूदास आदि संतन से प्रभावित रहीं ।

समाज के दलित आ उपेक्षित लोगन के बीच काफी लोकप्रिय भइलीं आ इहाँ के अनुयायी लोग शिवनारायणी संप्रदाय चलाके इहाँ के सिद्धांत के प्रचार-प्रसार कइल । आजो एह संप्रदाय के लाखन शिष्य उहाँ के पद के भक्ति भाव से गावेला ।

संत शिवनारायण के पद में बाह्याडम्बर के विरोध क के आंतरिक साधना पर जोर दिहल गइल बा । एह संग्रह के संकलित पद में उहाँ के ओह ढोंगी साधक के चेतावनी दे रहल बानी कि जब मन से विषय वासना ना छूटल, त झूठो के वैराग्य लिहल ओसही प्राणघातक होई जइसे स्वाद के लालच में मछरी वंशी में फँस के आपन प्रान गंवा देले । जदपि जंगल में विचरण करेवाला हरिण के केहू से दुश्मनी ना होखे, बाकि वंशी के मधुर गान सुने के फेरा में बहेलिया के हाथे आपन जान गंवा देला । फतिंगा नयनसुख खातिर दिया में जर जाला आ भंवरा सुगंधि के लालच में पचरस खातिर जान गंवा देल ओसही लालची मन के गति होला। तीर्थन में पत्थर पूजला

से आ मौन बनके ध्यान लगवला से कवनो लाभ ना होखे। बिना मन के वश में कइले ई सब व्यर्थ बा ।

असही दूसरका पद में अपना चंचल मन के चेतावत इहाँ के कह रहल बानी कि माया, मोह आ भ्रम के भयावह नदी बह रहल बा, जवना में आशा के लहर झकझोरता । काल आ कर्म नजदीके बा एहसे जगके जंजाल में भुला के अबेर मत कर, आपन रास्ता चेत । जब बुढ़ापा रूपी साँझ के अन्हरिया घेर लिही तब एह भवसागर के कइसे पार करब। हमार बात मानके अपना घरे चल, नाहि त पछतइब । अपना रहे जोग आपन देश बा, जहाँ सभ संत लोग अपना-अपना घर के वास करता । तूं अनकर आस का कइले बाड़ । शिवनारायण जी विचार के कहतानी कि अपना घर पहुँच के असंख्य सखियन के साथ धमार गाव । एह पद में अंतर्मुखी साधना पर बल दिहल गइल बा ।

विषय वासना छूटत न मन से

विषय वासना छूटत न मन से, नाहक नर बैराग करो ।
जैसे मीन बाझु वंसी मंह, जिभ्या कारन प्रान हरो ।
सो रसना वस बस कियो न जोगी, नाहक इन्द्री साधि मरो ।।1।।
जैसे मृगा चरत जंगल में, ना सो बैर करो ।
बंसी के तान लगी श्रवननि में, व्याधा बान सों प्रान हरो ।।2।।
जैसे फतिंगा परै दीप में, नैना कारन प्रान हरो ।
नासा कारन भंवर नास भयो, पांचो रसबस पांच मरो ।।3।।
तीरथ जाके पाहन पूजे, मौनी ह्वै के ध्यान धरो ।
शीव नरायन ई सभ झूठा, जब लग मन नहिं हाथ करो ।।4।।

सुनु सुन रे मन कहल मोर

सुनु सुनु रे मन कहल मोर, चेत करहु घर जहां तोर ।।टेक।।
मोह मया भ्रम जल गंभीर, बहै भयावन रहै न थीर ।।
लहरि झकोरै लै दूसरि आस, काल करम कर निकट बास ।।1।।
आपु देखि पंथ धरु सबेर, का भुलि भुलि जग करु अबेर ।।

सांझ समै जब घेरु अंधार, तब कैसे जइब उतरि पार ॥2॥
फिर पछतइब समै जात, चलहु आपन घर मानहु बात ॥
देश आपना आपन जोग, जहाँ बसहिं सब संत लोग ॥3॥
अपन अपन घर करत बास, केहु न काहुक करत आस ॥
सीव नरायन सब्द बिचारी, अनंत सखिन संग रचु धमारी ॥4॥

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संत शिवनारायण के जनम कवना जिला में भइल रहे ?

(क) सीवान (ख) आजमगढ़

(ग) बक्सर (घ) बलिया

2. संत शिवनारायण कवना पंथ के मानव रहीं ?

(क) सगुण पंथ (ख) सूफी पंथ

(ग) निर्गुण पंथ (घ) कवनो पंथ

3. जोगी खातिर कवना इन्द्रिय के साधल सबसे जरूरी बा ?

(क) रसना (जीभ) (ख) कान

(ग) मन (घ) नयन

4. फतिंगा दीया का टेम्ह पर गिरके जर जाला? फतिंगा के कवन इन्द्रिय एकर कारण होला?

(क) नैना (देखल) (ख) सुनल (श्रवण)

(ग) टस चीखल (घ) कवनोवा

5. संत शिवनारायण अपना पद में "सांझ समै" कहके आदमी के जिनगी के कवना अंश किओर इशारा करत बाड़े ?

(क) बालपन (ख) जवानी

(ग) बुढ़ापा (घ) कवनो ना

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आदिमी विषय वासना में पड़ के का करेला ?
2. फतिंगा काहे दीया के लौ के फेरा में पड़ेला ?
3. सुनु सुनु रे मन कहल मोर चेत करहु घर जहाँ तोर ?
   मोह मया भरम जल गंभीर, बहै भयावन रहै न धीर ।
   – एकर अर्थ कहीं ।
4. संत शिवनारायण 'आपन घर' कहके का बता रहल बानीं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पदन में कवना तरे धर्म के बाह्याडबर के निरर्थकता पर प्रकाश डालल गइल बा ?
2. निर्गुण पंथ के विकास में संत शिवनारायण के योगदान के वर्णन करीं ।

परियोजना कार्य

1. रउवा घरे भा गाँव-जवार में केहू के निर्गुण पंथ के कवनो संत के भजन याद होखे त ओकरा के सुन के लिखी ।
2. संत कबीर आ संत शिवनारायण ने तुलना करीं ।
3. शिवनारायणी संप्रदाय के कवनो मठ का बारे में लिखीं ।

शब्द-भंडार

जिभ्या – जीभ,

मृगा – हरिण,

बैर – झगड़ा,

व्यथा – दु:ख,

बहेलिया – शिकारी,

फतिंगा – उड़ेवाला कीड़ा,

पाहन – पत्थर,

मीन – मछरी,

रासना – जीभ,

नाहक – बेकार,

बैर – दुश्मनी,

श्रवननि – कान में,

दीप – दीया ।

2

मोर – हमार,

तोर – तहार,

घेरू – घेर लिहल,

अबेर – देर,

काहुक – केहू के,

रचु धमारि – धमार रचल, खुशील मनावल,

थीर – असथिर,

भयावन – भयानक,

समै – समय,

बास – रहला, बसल ।

अध्याय : दू

विषय-प्रवेश

भोजपुरी भारत के अलावे आउर कईगो देशन में बोलल जाले । आज हिंदी के जवना अंतरराष्ट्रीय स्वरूप के बात हो रहल बा ओकरा नेंव में भोजपुरिये बिया। मारीशस, फीजी, सूरीनाम, गुवाना, हालैंड जइसन देशन से भारत के जोड़े में भोजपुरी पुल के काम करतिया । शताब्दियन पहिले गइल भोजपुरिया लोग अपना लहू से सींच के एह देशन के खुशहाल बना दिहल। भोजपुरिया लोग मजदूर का रूप में एह देशन में गइल रहे आ अपना कर्तव्य से ओजवाँ के शासक बनल । एकर कथा प्रेरणा से भरल बा । भोजपुरिया लोग जहाँ भी बा अपना रीति-रिवाज, संस्कृति आ भाषा के जोगवले-सहजले बा । समय का बदलाव के असर भाषा पर जरूर पड़ल बा बाकिर मूल रूप अबहियों जस के तस बनल बा ।

एकांकी

सगरे जहान भोजपुरिया

पात्र

गुरुजी

मुन्ना

राजू

राहुल

अरविन्द

[विद्यालय का ओर से लड़िका लोग पटना घूमे आइल बा । ऊ लोग घूमत-घामत पटना के गाँधी मैदान तर पहुँचता]

मुन्ना : गुरु जी ! ई केकर मूर्ति ह ?

गुरुजी : ई मारीशस के राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम के मूर्ति ह । इहाँ के भोजपुरिये रहलीं ।

राजू : (अचरज से) त का भोजपुरी आउरो जगे बोलल जाले ?

गुरुजी : हाँ ! भोजपुरी दुनिया के कई गो देशन में बोलल जाले । ई नेपाल के नारायणी, लुंबिनी, रोतहट, बारा, पर्सा, चितवन, पवल, परारी, रूपनदेई आ कपिलवस्तु आदि इलाकन के मातृभाषा ह । एकरा अलावे मारीशस, फीजी, सूरीनाम, ट्रीनीडाड, गुवाना, हालैंड आदि देशन में भोजपुरिया लोग सदियन पहिले गइल रहे । ऊ लोग आज ले अपना भाषा आ संस्कृति के पीढ़ी-दर-पीढ़ी जोगवले चलि आवत बा ।

राहुल : ऊ लोग ओजाँ कइसे पहुँचल ?

गुरुजी : एकर कहानी त बड़ा दु:ख भरल बा ।

सब लड़िका : भला ऊ का ?

गुरुजी : अंग्रेज लोग भोजपुरिया लोग के नौकरी देवे के एग्रीमेंट कइल आ धोखा देके पनिया जहाज पर चढ़ा के समुद्र का रास्ते एह देशन में ले गइल । एह के आजो एकरा याद में एगो गीत गावल जाला–

कलकत्ता से चलल जहजिया

पवरियाँ धीरे बहऽऽ

एह लोग के गिरमिटिया मजदूर कहल गइल । गिरमिटिया एग्रीमेंट के एगो विकसित रूप ह ।

मुन्ना : अंग्रेज लोग अइसे काहे कइल ?

गुरुजी : मारीशस, फीजी, सूरीनाम आदि देशज के माटी ऊँख के खेती के अनुकूल रहे। भोजपुरिया लोग ऊँख के खेती करे में माहिर रहे । एही से अंग्रेज ओह लोग के फँसा के ले गइल ।

अरविन्द : तब त भोजपुरिया लोग के बड़ी साँसत भइल होई ?

गुरुजी : ओह साँसत के त पूछहीं के का बा ! ओह लोग के दु:ख के ओर-छोर ना रहे। आपन घर-दुआर, नाता-रिश्ता, हित-मित सब छुट गइल । टापू पर अंग्रेजन के गुलामी करे के पड़े । मातृभूमि के इयाद समुद्र में उठत लहर खानी हिलोर लेत रहे । एह लोग का दु:ख के बखान मारीशस के राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र भगत मधुकर के एगो बिरहा में आजो सुनल जा सकेला–

अइते मरीचिया में सोनवा सुदेहिया से
बंधल गुलमिया जंजीर
खाइ के त रात-दिन लौर, गारी, लात मिले
पीये के नयनवा के नीर

माहुर-माहुर भरल गोरवा के बतिया हो

बिंधले करेजवा में तीर

राहुल : तब फेन का भइल ?

गुरुजी : तू लोग त जानते बाड़ जे भोजपुरिया लोग बड़ी कमासुत होला । ऊ लोग मारीशस, फीजी, सूरीनाम जइसन कई गो उजाड़ टापूअन के अपना मेहनत से गुलजार बना दिहले। एकरा खातिर भोजपुरिया लोग के आपन जीव-जांगर ठेंठावे के पड़ल । एकरो के ब्रजेन्द्र भगत मधुकर जी लिखले बानी–

ऊँखवा के खेतवा में गल गइले सोनवा के

सोनवा समनवा शरीर

परती जमीनिया में ऊँखवा उगाइके हो,

सोनवा भइले खलिहान

लहुआ के बुंदवा से सिंचले मरीचिया

सोनवा नीयर कतेने जवान

वीर नीयर काम कइले कुलियन के बांके लाल

भारत के गरब गुमान

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अरविन्द : एह घड़ी एह देशन में भोजपुरिया लोग कवना हाल में बा ?

गुरुजी : हरेक देश के अलग-अलग स्थिति बा । मारीशस में भोजपुरिया लोग सबसे नीमन तरे बा जबकि फीजी में संकट में बा लोग ।

राहुल : मारीशस में कइसे बा सभे ?

गुरुजी : सर शिवसागर रामगुलाम जी, जेकरा मूर्ति तर हमनी ठाढ़ बानी के अगुआई में मारीशस आजाद भइल आ इहाँ के लमहर समय ले मारीशस के प्रधानमंत्री रहलीं।

राजू : इहाँ के पुरनियाँ कहाँ के रहनियार रहे ?

गुरुजी : इहाँ के पुरनियाँ भोजपुर जिला के जगदीशपुर थानान्तर्गत हरिगाँव के रहनियार रहे।

सभे लड़िका (खुशी से) : आँय ! भोजपुर के ! हरिगाँव के !!

अरविन्द : इहाँ के बाबूजी के का नाँव रहे ?

गुरुजी : इहाँ के बाबूजी के नाँव मोहित महतो रहे । उहाँ के 1871 में मारीशस ले जाइल गइल रहे । मोहित महतो के बाबूजी के नाँव रामशरण महतो रहे ।

मुन्ना : एह घड़ी मारीशस के प्रधानमंत्री के बा ?

गुरुजी : एह घड़ी उहाँ के प्रधानमंत्री श्री नवीनचन्द रामगुलाम जी बानी । इहाँ के सर शिवसागर रामगुलाम जी के लड़िका हईं ।

राजू : ई त आउर खुशी के बात बा । बाकिर फीजी में भोजपुरिया लोग काहे संकट में बा ?

गुरुजी : ओजवाँ भोजपुरिया लोग के संगे भेदभाव होता । उहाँ स्वदेशी मूल-विदेशी मूल के मुद्दा बना के कुछ लोग जबरन सत्ता दखलिया लेले बा ।

मुन्ना : आउर सब देशन में भोजपुरिया लोग मजे में बा । कई जगे ई लोग राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनत रहेला । गुयाना में डा. छेदी जगन जी प्रधानमंत्री बनल रहीं।

अरविन्द : त का मास्टर जी ! ऊ लोग आजो भोजपुरी बोलेला ?

गुरुजी : हाँ । बाकिर ओह में तनी-मनी अंतर रहेला । हमनी किहाँ कहलो जाला-कोस-कोस पर पानी बदले, पाँच कोस पर बानी । ई भाषाविज्ञान के नियमों ह । अंग्रेजिओं में अइसहीं होला । इंगलैंड, अमेरिका आ भारत के अंग्रेजी में अंतर बा ।

.... अब साँझ हो गइल । अब लवटल जाव ।

(सभे लवटता)

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ब्रजेन्द्र भगत मधुकर के हवे ?
2. सर शिवसागर रामगुलाम जी के रहे ?
3. एह घड़ी मारीशस के प्रधानमंत्री के बा ?
4. मरीचिया कवना देश के कहल जाला ?
5. **कवना-कवना देश में भोजपुरिया लोग बा ?**

   (क) मारीशस (ख) सूरीनाम
   (ग) चीन (घ) मारीशस आ सूरीनाम दूनों में
6. **'सगरे जहान भोजपुरिया' कवना विधा के रचना ह ?**

   (क) कविता (ख) कहानी
   (ग) निबंध (घ) एकांकी
7. **मारीशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम के पुरखा लोग कहवाँ के रहे लोग ?**

   (क) भोजपुर जिला के जगदीशपुर थान के हरिगाँव के
   (ख) सीवान जिला के
   (ग) गोपालगंज जिला के
   (घ) उत्तर प्रदेश के देवरिया जिला के
8. **छेदी जगन कहवाँ के प्रधानमंत्री बनल रहीं ?**

   (क) मारीशस (ख) गुवाना
   (ग) फिजी (घ) सूरीनाम
9. **सर शिवसागर रामगुलाम के मूर्ति कवहाँ स्थापित बा ?**

   (क) पटना में (ख) आरा में
   (ग) छपरा में (घ) मोतिहारी में

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नेपाल में कहवाँ-कहवाँ भोजपुरी बोलल जाले ?
2. तीन गो विदेश के नाँव लिखीं, जहवाँ भोजपुरी बोलल जाले ।
3. भोजपुरी क्षेत्र के मजदूरन के अंग्रेज लोग मारीशस काहे खातिर ले गइल ?
4. आज मारीशस में भोजपुरिया लोग के कवन हाल बा ?
5. फिजी में भोजपुरिया लोग का संगे कइसन व्यवहार हो रहल बा ?

दीघ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पाठ के आधार पर विदेशन में भोजपुरिया लोग के स्थिति बताईं ।
2. 'अइते मरीचिया में सोनवा...... बिंधले करेजवा में तीन' के भावार्थ लिखीं ।

भाषा आ व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. **पाठ में आइल निम्नलिखित शब्दन के कवन तरह के शब्द कहल जाला ?**

   घर-दुआर, नाता-रिश्ता, हित-मित, ओर-छोर ।

2. **निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखीं–**

   अनुकूल, दुःख, स्वदेशी, नीमन ।

3. **पाठ के ध्यान से पढ़ीं आ निम्नलिखित के चुनाव करीं–**

   (क) पाँच गो विशेषण शब्द

   (ख) पाँच गो संज्ञा शब्द

परियोजना कार्य

1. 'सगरे जहान भोजपुरिया' के अपना संघतिअन के संगे मंचन करीं ।
2. रउवा गाँव-जवार में केहू भोजपुरिया गिरमिटिया प्रथा के तहत विदेश गइल होखे त पता कके ओकरा बारे में लिखीं ।
3. भाषा में होते बदलाव आ विविधता का बारे में जानकारी प्राप्त करीं

शब्द-भंडार

एग्रीमेंट	–	समझौता
गिरमिटिया	–	एग्रीमेंट से विकसित रूप
पवरिया	–	हवा
ऊँख	–	ईख
सांसत	–	बहुत दुःख
मरीचिया	–	मरीशस के एगो नाँव
सुदेहिया	–	सुंदर शरीर
लौर	–	लाठी
माहुर	–	जहर
गोरवा	–	अंग्रेज
गुलजार	–	खुशहाल
हँसी	–	खुशी से भरल
लहूआ	–	खून
गरब	–	गर्व
पुरनियाँ	–	पूर्वज, पुरखा लोग ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अध्याय - तीन

संत पलटू दास

पलटू दास के जीवन के संबंध में कवनो विशेष जानकारी नइखे। उपलब्ध तथ्यन के आधार पर कहल जा सकेला कि इहाँ के फैजाबाद जिला के जलालपुर नाँव के गाँव में पैदा भइल रहीं । इहाँ के पिता के नाम कांदू बनिया रहे । इहाँ के गुरु के नाम बाबा जानकी दास रहे । बाबा पलटू दास जादे समय अयोध्या में बितवलीं । इहाँ के कबीरदास से प्रभावित रहीं आ कबीरे दास लेखा समाज के विकृति पर खरा-खोटा सुनावे से बाज ना आवत रहीं । इहाँ के रचना में कुंडलियन के संख्या अधिका पावल जाले ।

इनका निधन के संबंध में बतावल जाला कि अयोध्या में कुछ साधु लोग इनका ख्याति आ उपदेश से चिढ़के इनका के जिअते जरा दिहलन बाकी जगन्नाथ जी में ई एक बेर फेर देखल गइलन आ ओकरा बाद इहाँ के अनंतकाल में समा गइनी ।

विषय-प्रवेश

साधना में सिद्ध साधक ओह स्थिति के पहुँच जाला जहाँ भक्त आ ब्रह्म के भेद मिट जाला । दूनों एकमेव हो जाला । तब सूरति, सबद, जोग, जोगी, आत्मा, परमात्मा अलग-अलग कुछ ना रह जाला । बुझाता, जे भक्त बा उहे भगवान बा । जे नश्वर रहे, ऊहे अब अविनाशी बा, लोक, परलोक के अवभव सब एके बा ।

साधो भाई

साधो भाई उहवा के हम बासी,
जहवां पहुचै नहि अबिनासी ॥ टेक॥

जहवा जोगी जोग न पावै,
सुरति सबद नहिं कोई ।
जहवा करता करे न पावै
हमहीं करैं सो होई ॥1॥

ब्रह्मा बिस्नु नाहिं गमि सिव की,
नहीं तहा अबिनासी ।
आदि जीति उहा अमल न पावै,
हमहीं भोग विलासी ॥2॥

त्रिकुटी सुन्न नाहि है उहवां
दंडमेरू ना गिरिवर ।
सुखमन अजपा एकौ नाहीं,
बंक नाल ना सरवर ॥3॥

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'साधो भाई उहंवा के हम वासी, जहवाँ पहुँचि नहि अविनासी – रचेवाला कवि के नाम बताईं।

2. **पलटू साहब कइसन ब्रह्म के उपासक रहीं :**

   (क) सगुन　　(ख) निर्गुन

   (ग) राम　　(घ) शिव

3. **पलटू साहब कवना परंपरा के कवि मानल जाइले :**

   (क) तुलसी-परंपरा के　　(ख) कबीर-परंपरा के

   (ग) बुद्ध-परंपरा के　　(घ) जायसी-परंपरा के

4. पलटू साहब के पद में 'ब्रह्मा' के बाद कवना देवता के नाम जाइले बा ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पलटू साहब कब आ कहाँ पैदा भइल रहीं ?
2. पलटू साहब के पंथ के बारे में तीन पंक्ति लिखीं ।
3. पलटू साहब आ कबीरदास के ईश्वर निर्विकार बाड़न, कइसे ?
4. पलटू साहब अपना पद में साधो के काहे संबोधित कइले बाड़े ?
5. 'जहँवा करता करे न पावै, हमहीं करै सो होई' के अर्थ लिखीं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पलटू साहब के जीवन-वृत्त लिखीं ।
2. निर्गुन संत के लक्षण बयान करीं ।
3. सगुण आ निर्गुण पंथ के अंतर समझाईं ।

4. उपासना में जब भक्त आ भगवान एक हो जालन तब कवन स्थिति पैदा हो जाला ? आ काहे ?

5. पठित कविता के भाव स्पष्ट करीं ।

परियोजना कार्य

1. पलटू साहब जइसन कवनो दोसरा संत कवि के पद लिखीं ।

2. आस-पास केहू कबीरपंथी होखस त उनकर रहन-सहन बताईं ।

3. कबीरदास के कवनो रचना जवना में आत्मा-परमात्मा के बात होखे, ओकर भाव समुझाईं।

शब्द-भंडार

अविनासी	–	जेकरा नाश ना होखे
जोग	–	साधक द्वारा ईश्वर प्राप्ति खातिर साधना, एकर आठ गो प्रकार बतावल गइल बा–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा आ समाधि
सुरति	–	ध्यान (इष्ट के ध्यान)
सबद	–	अनाहद नाद (कबीर के रचना के नाम)
जोति	–	रोशनी, लौ
अमल	–	प्रयोग, व्यवहार में लावल
भोग-विलासी	–	भोग विलास करे वाला
त्रिकुटी	–	भँव के बीच के जगह
सुन्न	–	जवना पर स्पर्श के कवनो असर ना पड़े
दंडमेरू	–	मेरूदंड
गिरिवर	–	पहाड़
सुखमन	–	सुषुम्ना नाड़ी
अजपा	–	जवन जप स्वतः होत होखे
बंक	–	टेढ़
नाल	–	कमल के डंठल
सरवर	–	तालाब

अध्याय : चार

विशुद्धानंद

विशुद्धानंद के जनम इहाँ के परिवार मूलत: भोजपुर के बासिन्दा रही। बिहार के भागलपुर जिला के घोघा बाजार स्थान में पहली जनवरी सन् 1949 ई के भइल रहे। प्रारंभिक शिक्षा के बाद ई स्नातकोत्तर पास कइलीं आ स्वतंत्र लेखन आ पत्रकारिता के साथे-साथे सिनेमा खातिर गीतो लिखली। अबही ई स्वतंत्र लेखन करत सिनेमा के गीत-पटकथा आदि लिखे में व्यस्त साबानी। इहाँ के प्रकाशित किताके नाँवबा–'एक नदी मेरा जीवन (गीत-संग्रह) आ कालजली बर्बरीक (खंड काव्य)

विषय-प्रवेश

शादी-बियाह, जग-परोजन में संबंधी किहाँ से आइल कवनो मिठाई के बाएन कहल जाला, एह कहानी में लेखक सहज सरल ढंग आ प्रवाहपूर्ण भाषा में बतावे के कोशिश कइले बा कि आदमी के अपना अज्ञानता आ लापरवाही के चलते एड्स अइसन खतरनाक बीमारी के शिकार होखे के पड़ेला।

एह कहानी के माध्यम से 'एड्स' बेमारी के बारे में जानकारी दिहल गइल बा। एगो उद्देश्यपरक रचना उच्च कोटि के कलाकृति हो सकेला–एकर ई सटीक उदाहरण बा। 'एड्स' जइसन भयावह बेमारी से नवकी पीढ़ी के सावधान कइल गइल बा।

कहानी

बाएन

सुगिया ना जानत रहे कि ओकरा प्रीतम 'डरायबर' के का हो गइल बा । जानत तऽ ओकर डरायबर पति जीतनो ना रहे कि ओकरा कवन रोग लाग गइल बा । अपना खानदान में ऊहे एगो गोर, गबरू, छव फीटा नवही रहे । घुँघरइला बार, चाकर छाती, मुट्ठी भर के कमर, ऊँच लिलार, सकुची के पोंछ के कोड़ा जइसन कसल गठीला शरीर । जब फगुआ चाहे चइता के गोल में कांसा के बड़का झाल ले के, ठेहुनियाँ मार के, सीना तान के अलाप ले, तऽ पूरा गाँव-जवार ओकरा टाँसी पर 'अह-अह' कर उठत रहे । अभिलाखा ठाकुर अपना मोंछ पर ताव देत ललकार उठस–'चाबस बेटा । करेजा बावन गज के कर देले पट्ठा, ओकरा ब्यासगिरी के चर्चा गाँव-जवार में चटकारा ले के होत रहे । गीत-गवनई में ओकर प्रतिष्ठा बढ़ते जात रहे । ओकरा शोहरते पर लोभाके, सुगिया के बाबू ओकरा के आपन दामाद बनवले रहन ।

सुगियो कमाल के सुन्नर लइकी रहे । विधाता ओकरो के फुरसत में, चाव से रचले रहन। नैन-नक्स छुरी-कटारी नीयर तीखा, धप-धप गोर, गज-गामिनी घर के दुलरुई तेतर बेटी। ओकर बाबू, अपना गिरहथ लोग के दाढ़ी बनावत गुमान से बोल उठस... 'मालिक ! साँचे कहल बा.. . तेतर बेटी राज रजावे, तेतर बेटा भीख मँगावे.... रउआ सभे देखब.... अपना सुगिया खातिर अइसन दमाद उतारब कि देखनिहार के धरनिहार लागी.... लछुमन उर्मिला के जोड़ी बनाइब ।'

आ.... साँचो... जब सुगिया आ जीतन के सुमंगली होत रहे, तऽ जात बिरादरी का.... गाँव-जवार के लोग वाह-वाह कर उठल रहे । अभिलाख ठाकुर जब सुगिया के छेंके गइल रहस तऽ ओकरा के देखते, अनेरे उनका मुँह से निकल गइल रहे.... "हमरा लछुमन के उर्मिला मिल गइल" । सुगिया के बाबुओ के पाँव, जीतन अइसन दामाद देखके, जमीन पर ना पड़त रहे ।

सुगिया जौने दिन जीतन-बहू बन के घर में आइल रहे, ओही दिन से घर के रौनक बदले लागल रहे । दिन दूना-रात चौगुना तरक्की होखे लागल रहे । जीतन के लोखर लेके दुआरे-दुआरे गइल, आ दाढ़ी बनावल रुचत ना रहे । एही से ऊ सुगिया के समझा-बुझा के कलकत्ता चल गइल । एगो ट्राँन्सपोर्ट कंपनी में पहिले खलासी, फेर डरायबर बन के अपना ट्रक का साथे,

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

हिन्दुस्तान के पूरुब-पच्छिम, उत्तर-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन एक करे लागल। गाँव के चउपाल पर रोजे चरचा होखे..... "जीतन व्यास दूनो हाथे पइसा पीट रहल बाड़े ।" माटी के खपड़इल घर, पक्का कोठा के रूप ले लिहलस । सुगिया के बदन पर रेशमी साड़ी, आ गहना-गुरिया देख के नीमन-नीमन गिहथिन लोग के आँख फैल के सितुहा हो जाय ।

सुगिया, जब अपना पुश्तैनी रेवाज के अनुसार, अपना पातर कमर पर 'बाएन' के दउरा ले के, दहिना हाथ लहरावत लयदार लचक लेले मस्त चाल से, बाएन बाँटे खातिर गाँव के गली से गुजरे तऽ चउक-चउबारा पर जमल नवही लोग भीतरे-भीतर कट के रहि जास । केहू के छेड़खानी के हिम्मत ना होत रहे । बाएन बाँटत सुगिया के देख के भसुर के उमिर वाला जवानो लोग देवर बने खातिर ललच जास ।

-"का हो सुगिया भउजी ! सबके के बाँटऽ तारू, हमरा के छाँटऽ तारू ? अरे हमार बखरा बा कि ना ?" कौनो बइठका से आवाज आई ।

-"हँऽ बा नूँ देवर जी.... रउआ दीदी लगे..... जाईं.... भर हींक चाभीं ।"

बिंदास आ हाजिरजबाब सुगिया जवाब दे के मुसकी के मोती झारत, अपना मस्त चाल से निकल जाय, आ बखरा माँगे वाला नवही पर ओकर साथी, संग-बचन का साथे ठहाका लगा के पाँच घइला पानी ढरका देस। ओकरा हाजिर-जवाबी, मस्ती आ खुशमिजाजी पर पूरा गाँव फिदा रहे । काज-परोजन में, जजमान-गिरहथ लोग किहाँ, सुगिया ठकुराइन पहिला पसंद रही । सुगियो, अपना हिस्सा के सरग-सुख भोगे में मस्त रहे ।

बाकी...... दइबो के लीला विचित्र होला । ओकर मरम केहू ना जाने । सुगिया के बियाह के भइला दस बरिस हो गइल । साल-दर-साल ऊजर करिया दिन-रात गुजर गइल, बाकी सुगिया के नारी के पूर्णता माने महतारी बने के सुख, दइब ना दिहले । उनुकर मर्जी का रहे ई तऽ ऊहे जानस. ..... सुगिया के का ? ऊ तऽ उनका मर्जी के आपन मर्जी मान के, शादी-बियाह, परब-तेवहार में अपना गीतन के मस्ती से, खुल्लम-खुल्ला हास-परिहास से सउँसे गाँव के रसबोर करत, अपना भीतर से खुश रहे । ओकरा अपना जिनगी से कवनो शिकायत ना रहे ।

एक रात.... दस बजत रहे । पड़ोसी ढोंढई राम के दोकान में लागल डबलू. एल. एल. टेलीफोन रहे जेकरा से गाँव भर के जुड़ाव बाहर से हो जात रहे । ढोंढाई टेलीफोन उठा के बतियवले आ अपना बेटा छोटू के सुगिया के बतियवले आ अपना बेटा छोटू के सुगिया के बोलावे खातिर भेज दिहले । सास के गोड़ में तेल रगरत सुगिया से छोटू कहलस कि जीतन काका के

फोन बा । सासो ओकरा के खुशी-खुशी जाए के आदेश दे दिहली । सुगिया उछाह में उठके छोटू के साथे अँगना से निकलल । जेठानी-देवरानी के भुन-भुन अनसुना कर के जब ऊ बाहरी बइठका से गुजरत रहे तऽ अभिलाख ठाकुर खँखारत टोक दिहले....

–''एतना रात के कहाँ जातारू कनियाँ ?''

–''डरेबर बाबू के फोन बा बाबूजी ।''

–''अच्छा... जा... चोरबतिया तऽ ले लऽ ?''

–''अच्छा बाबूजी ।''

सुगिया उनका चउकी से टॉर्च उठा के, झटका से निकल गइल ।

ढोंढ़ाई राम.... टेलीफोन के बगल में राखल रिसीवर के ओर इशारा कऽके.... दोकान के बाहर बइठ गइले । मरद-मेहरारू के बीचे ऊ बाधक बनल उचित ना समझले। सुगिया रिसीवर उठवलस। ओकरा हाथ में रिसीवर रहे अ चेहरा पर आपना प्रीतम 'डरेबर' के बोली सुने के उत्कंठा ।

–''हेलोऽ..... कहाँ से बोलऽतारऽ ए डरेबर बाबू ? पटना से ? तोहार आवाज अतना कमजोर काहे लागत बा हो ? तबीयत खराब बा का ? ....

आ रहल बाड़ऽ कब ? काल्हे ? अरे आवऽ आवऽ सब ठीक कर देब.... हंऽ हऽ... इहाँ सब कुछ ठीक-ठाक अपना जगहे पर बा.... राखऽ तानी ।''

रिसीवर राख के सुगिया बाहर निकलल । अँचरा के खोंट में बान्हल दू रोपेया के सिक्का खोल के, ढोंढ़ाई राम के हथेली पर धरत, हँसते-हँसते बोलल...... 'थैंकू देवर जी.... बात करावे खातिर थैंकू ।' आ भीतर से गुद-गुदी महसूस करत, उड़ंकू नीयत अपने घरे आ गइल। चउकी पर ससुर के चोरबत्ती धरत बता देलस कि जीतन कालहुए आवत बाड़े ।

बिहान भइला जीतन अइले, बाकी साल भर बीत गइल.... लवट के काम पर ना जा सकले। उनुकर बेमारी बढ़ते जात रहे । सुगिया अपना डरेबर के ले के कहाँ-कहाँ ना गइल ? ओझा-गुनी, पीर-फकीर, देवल-मजार सगरे टंगले फिरले, सैकड़ो मनता मँगलस, होमियोपैथी, हकीमी, वैदगिरी, सब इलाज करवलस । दूध-फल अंडा-पनीर, छेना-खोआ एक से एक पुस्टई खियवलस बाकी कौनो असर ना । ओकर प्रीतम डरेबर हड्डी के ढाँचा बनल जात रहे। बड़-बड़ बिल्लौरी आँख

कोटर में धँस गइल । खिलल गाल पुचुक गइले सऽ, दाँत बहरी लउके लागल, घुघुर-धुघुर बार झर गइले सऽ । जीतन का साथे सुगिया नीयन कमल के जइसे पाला मार गइल । सोना नीयन दमकत अंग-अंग झुलस गइल, सब रूप, सब मस्ती, ना जाने कहँवा बिला गइल ? ना जाने ककर नजर लाग गइल ओकरा सोहाग-भाग के ?

सुगिया पी.एम.सी.एच. के अलगढ़वा वार्ड में जीतने नीयन रोगियन के बीचे बेड के पैताना में बइठल, अपना सोहाग-भाग आ दुर्भाग्य के अनुपात के समझे में गुमसुम कहीं भुलाइल रहे कि डॉक्टर के आवाज पर ओकर कठमुर्की टूटल । ऊ सम्हर के खड़ा हो गइल ।

–"सुगिया देवी !"

–"जी डाकदर बाबू ।"

–"क्या आपको पता है कि आपके पति को एड्स है ?"

– "हम कौनो डाकदर बैद हई सरकार कि हमरा पता होई ? ई कवन रोग हऽ हुजूर ?"

–"देखिए । मैं आपको समझाने की कोशिश करता हूँ । एड्स एक ऐसा रोग है, जो शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता ही नष्ट कर देता है । यानी शरीर के अंदर रोगों के खिलाफ लड़ने की जो ताकत होती है वही खत्म हो जाती है । शरीर अनेक रोगों का घर बन जाता है। इस पर किसी पुष्टिकर भोजन या दवा का कोई असर नहीं होता । धीरे-धीरे आदमी की मौत हो जाती है । यह रोग खून में एच.आई.वी. नामक विषाणु के प्रवेश करने पर होता है। यह विषाणु प्रदूषित सूई से, एड्स ग्रसित व्यक्ति के साथ असुरक्षित संभोग से, माता से संतान में, अथवा दूषित रक्त चढ़वाने से एक से दूसरे शरीर में, प्रवेश करता है और तेजी से फैलता है । इस तरह जो अपने जीवन-साथी के अलावे दूसरे अनजान लोगों के साथ असुरक्षित सहवास करते हैं उनपर विशेष खतरा मंडराता रहता है । यह विषाणु साथ रहने, खाने-पीने, हाथ मिलाने अथवा कपड़ा-बर्तन इस्तेमाल करने से नहीं फैलता । चूँकि अब तक इस रोग की कोई कारगर दवा नहीं है, इसलिए इससे मृत्यु निश्चित है । एकमात्र सच्चाई यही है कि जानकारी और संयमित जीवनशैली ही इससे बचने के उपाय हैं। आपके पति ट्रक ड्राइवर हैं... इनको ये रोग कैसे लगा, यह तो यही जानें, लेकिन अभी आप भी अपना खून दीजिए । हमें आपकी भी जाँच करनी है ताकि आप सतर्क होकर संयमित जीवन जी सकें और आगे इसे फैलने में शामिल न हो सकें । सिस्टर । इनके रक्त का नमूना लो।"

सुगिया हक्का-बक्का डॉक्टर के बात सुनत रह गइल । नर्स नया सिरिंज निकाल के ओकरा बाँह से खून ले लिहलस । नमूना ले के डाक्टर आ नर्स तऽ चल गइल लोग बाकी सुगिया के

B

दिमाग में सवालन के बवंडर छोड़ गइल । ओकर चेहरा उतर गइल, हउल दिल होखे लागल । फेर कसहूँ अपना के सम्हरलस जब तक साँस तबतक आस होला ई सोच के रात भर के जीतन के सेवा मशीन नीयन करत रहल ।

भोर भइल... रात के सब चिंता झटक के ऊ कमरा से बाहर निकलल... जल्दी-जल्दी अपना किरिया करम से निपट के आइल...... जीतन के हाँथ-मुँह धोआवलस। दउर के अस्पताल के बाहर गइल..... चाह, पावरोटी, सिनल अंडा, केरा वगैरह ले के आइल । अपना डरेबर के नाश्ता करवलस, चाह पियवलस । जीतन अपना अपराधबोध में गुम सुम ओकरा से आँख ना मिला पावत रहस । ऊ चुपचाप ओकर निहोरा माने पर बेबस रहे । बस, सुगिया जवन-जवन आदेश देवे ओकर पालन करत जाय । एतना सुरीला गायक, दहाड़ वाला मरदाना, एकदम मौन, सून्न, आपन भोगना भोगे पर बेबस लाचार रहे । ऊ लेटले-लेटल, छत के सटले गोल हवा वाली जाली में लागल गउरइया के उजरल खोंता के निहारे लागल जौना के छोड़ के पंछी परा गइल रहले सऽ ।

–''सुगिया देवी !'' ई डाक्टर के आवाज रहे ।

–''जी डाक्दर बाबू !'' असरा आ उमेद के साथ उठ के सुगिया स्वागत कइलस ।

–''हमें खेद है..... मुझे यह सच्चाई कहनी पड़ रही है कि आप भी एच.आई.वी. पोजिटिव हैं यानी आप के खून में भी एड्स के विषाणु पाये..... ।''

डाक्टर के बात पूरा होत-होत सुगिया पुक्का फार के रिरिया उठल –

– ''जा हो डरेबर बाबूऽऽऽ... ई बाएन कहँवा से ले अइलऽ हो.... अरे हमरो बखरा लगा देल हीऽऽ.... हाय रे करऽऽम.... ।''

सुगिया डकरत, हँकरत माथा धर के धरती पर धस से बइठ गइल । ओकरा रोआई से पूरा वार्ड में पीर पसारे लागल । पत्थल के मूरत बनल जीतन के कोटर में धँसल दूनों आँख से, दरद आ ग्लानी, पानी बन के ढ़रके लागल जवना के धार में, तकिया के साथे-साथे ओकर समूचा अस्तित्व गहराई में डूबत चल गइल ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बाएन' गद्य के कवन विधा के रचना बा ?

   (क) निबंध (ख) कहानी

   (ग) संस्मरण (घ) रेखाचित्र

2. 'बाएन' रचना कवना विषय पर आधारित बा ?

   (क) प्रेम पर (ख) गीत-गवनइ पर

   (ग) एड्स पर (घ) पति-पत्नी पर

3. 'बाएन' कहानी के लिखले बा ?

4. केकरा व्यास गिरी के चर्चा गाँव-जवार में चटकारा लेके होत रहे ?

5. 'बाएन' के नायिका के हवे ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. 'हमरा लछुमन के उर्मिला मिल गइल' एह पंक्ति में लछुमन आ उर्मिला केकरा कहल गइल बा आ कवना दृष्टि से ?

7. एड्स शरीर सबसे पहिले केकरा खत्म करेला ?

8. एड्स कवना विषाणु से उत्पन्न होला ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9. एड्स फइले के कवन-कवन कारण होला ?

10. कवन-कवन चीज से एड्स के विषाणु ना फइले ?

11. जीतन काहे लेटल-लेटल गउरइआ के उजरल खोंता निहारत रहे ?

12. नीचे लिखल मुहावरन के अर्थ दिहल बा, एकनी के वाक्य में प्रयोग करीं।

(i) **आँख फइल के सितुहा भइल**–अचम्भा में पड़ल

(ii) **बावन गज के करेजा भइल**–गर्व से उत्साहित भइल

(iii) **पाँच घइला पानी ढ़रकावला**–निराश कइल

(iv) **हड्डी के ढ़ाँचा बनल**–शरीर कमजोर भइल

(v) **जबतक साँस तबतक आस**–कवनो छोटो सहारा रहला पर सफलता के आस।

(vi) **दूनो हाथे पइसा पीटल**–खूब कमाइल

(vii) **मोंछ पर ताव दिहल**–ताकत, अहंकार के देखावल

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

शब्द-भंडार

चाबस – शाबस

बाएन – कवनो बाहर से आइल सनेस के दोसरा में बांटल

नवही – नया, जवान

टाँसी – गीत में मधुर आ टेस आवाज में देर तक टेरल

व्यासगिरी – कीर्तन, गीत-गवनई में मुख्य रूप से गावे वाला

दुलरई – जेकरा खूब मानल जाला, दुलारी

तेतर बेटी – तीन गो बेटा पर से जनमल बेटी

चउपाल – जहाँ गाँव के लोग विटोरा के वात-विचार करेला

खपड़इल – खपड़ापोश, छप्पर वाला

बखरा – हिस्सा

काज-परोजन – कवनो संस्कार आदि का अवसर पर होखे समारोह

चोरबत्ती	–	टॉर्च
उड़ंकू	–	उड़ के आवे वाला
मनता	–	कवनो चीज प्राप्त करेला देवी-देवता के चढ़ावा मानल ।
ठकमुर्की	–	का करीं का ना करीं के भाव
कोटर	–	पेड़ में बिल, गड़हा नियर
रिरियाना	–	शोर आवाज देके भगावल, बोलावल
डकरत	–	जोर लगा के बोलल
हकरत	–	जोर लगा के ललकारल, बोलल
पुस्तैनी	–	पुरखा लोग से पावल ।

पठेत्तर

सात भईसि के सात चभक्का; सोरह सेर घीव खाँउ रे ।

कहाँ बाड़ें तोर बाघ मामा, एक पकड़ लड़ि जाँउ रे ।।

भंइसि का दूध में ऊ काबू बा कि जेवन पाड़ा खाली बैलन का हुरपेटि दिहला पर खून मूते-लागेलन ऊहो बाघ से लड़े के समाती राखत बाड़ेन । ईहे सोचि के दूबर करज-गुलाम काढ़ि के भंइसि कीने के ठानि लिहलन । मेहरारू हाले के मूअलि रहे । दूबर का लरिका पोसे के रहे। लमहर चाकर पलिवार रहे । सोचलन कि घीव बेचाइ जाइल करी । माठा पानी से लरिकवा मोटजो मजे में खा लिहल करिहन । गोरस-पताई से कुल्हि बेकतिन के गुजर हो जाई । लरिका के नाँव भीम एह खातिर धइलन कि का जाने नाँवों के असर परत होखे। उनुकर माई बाबू उनुकर नाँव 'दूबर' धर दिहलन तेवर जिनिगी भर दूबर केतनों धूरि लगवलन उधरेंगवां ना भइलन । दूबर के कोसिस त ईहे रहे कि भीम के महतारी के मूअल ना बुझाउ। घीव-दूध के अलमगंज रही । भीम का जेवने मन करे तेवने खात रहसु आ देहि बनावसु । भइसि ठीक-ठाक भइल सवा तीन सौ में । तोड़ा के रुपया दूबर सहेजलन त कुल्ही आठ बीस आ पांच गो भइल । बुटुखुरी राय से जोड़ववलन त पैंतीस कम दू सौ भइल । अबहीं आठ बीस अउरी रुपिया रहति तब जाके त मामिला फरियाइत ।

अबकी दूबर सोचिले रहलन कि असों गूर बेचि के सेठ फटकचन्द के लहना-तगादा साफ कइ देइबि । करज गुलाम आदिमी इज्जते खाति खाला । एगो त सूदि देत-देत नाकि में पानी हो गइल बाटे । उनुकरा रुपया के सूदि हलमान जी का पोंछि नीयर बढ़ते जात बा । हर साल हिसाब साफ कइल जाला बाकिर साल के आखिर में जब हिसाब कइल जाला त फेनु जस के तस । करजा देवे खातिर दूबर दसो नोह जोरि के तैयार रहेलन बाकिर डहरी-घाटे जबे सेठ फटकचन्द से भेंट हो जाई माहुर नीयर बोले लागेलन । हीत-नात केहू दुआर पर आइल रही, उनुकर तगदिहा चोंहपि जाइ आ लागी माहुर ढकचे । बेचारू दूबर चिरइता के घोंट पीके रहि जालन । करबे का करसु । अबर के खीस खोंटि बरोबर ।

अभ्यास

1. "सात भईंसि........ लड़ि जाउं रे ।" छूटल पंक्ति पूरा करीं ।
2. दूबर भइंसि काहे खातिर खरीदल चाहत रहन ।
3. दूबर अपना लड़िका के नाँव भीम काहे रखलन ?
4. कर्ज काहे खातिर लीहल जाला ?
5. कर्ज लेबे वाला काहे परेशान रहेला ?
6. 'अबर के खीस खोंट बरोबर' के अर्थ स्पष्ट करीं ।
7. रोपेया के सूद केकरा नीयर बढ़त जात रहे ।

अध्याय : पाँच

कुलदीप नारायण 'झड़प'

परिचय

कुलदीप नारायण 'झड़प' जी के जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया जिला क लिलकर गाँव का एगो बड़ गृहस्थ परिवार में भइल रहे । उहाँ का गहन स्वाध्याय से साहित्य, भाषाशास्त्र, समाज, संस्कृति के ज्ञान अर्जित कइलीं । उहाँ के कार्यक्षेत्र सारण प्रमंडल रहल, जहवाँ शिक्षक रहीं। उहाँ के आजादी का लड़ाई में भाग लिहलीं आ वृन्दावनलाल दास, राहुल सांकृत्यायन आदि का प्रभाव से 'जनपदीय भाषा आंदोलन' आ किसान आंदोलन में सक्रिय भाग लिहलीं । काशी नागरी प्रचारिणी सभा से जे हिंदी शब्दकोश कई भाग में प्रकाशित भइल, ओकरा संपादक-मंडल में झड़प जी भी रहीं । अपना कार्यक्षेत्र में धूमधाम के उहाँ के शोध कइलीं। खास कके तुलसीदास जी का जीवन पर उहाँ के काम महत्त्वपूर्ण बा । जनपदीय आंदोलन का सिलसिला में सभ जनपदीय भन के विकास खातिर झड़प जी आजीवन उत्जोग कइलीं। 'अरघ' 'दोहा सतसई' 'बात क बात' आदि झड़प जी के भोजपुरी में प्रकाशित किताब बाड़ी स ।

विषय-प्रवेश

सारण में काम करत में उहाँ का फतेहबहादुर शाही का बारे में काम कइलीं जे 1757 में भइल जनक्रांति में अंग्रेजन से लोहा लिहले । फतेहशाही फिरंगियन से लोहा लेवे वाला नायक रहले । उनका से हुस्सेपुर के गढ़ छीन के अंग्रेज मीर जमाल के मलगुजारी वसूले के काम किहले स । 'मीर जमाल बध' में एही जमाल के हरा के मारे के कथा दिहल बा । 'बंकजोगिनी' का वन में लुका के अपना मुट्ठी भर सैनिकन का बलपर छापामार युद्ध कके फतेहबहादुर अंग्रेजन का नाक में दम कर दिहले । एह कविता में 'जमाल वध' खंडकाव्य के एगो अंश दिहल ब बा जवना में जमाल के युद्ध में हरा के मार देवे का युक्ति पर विचार कइल गइल बा ।

फतेहशाही

प्रथम क्रांतिकारी ऊ वीर,
फतह शाही नृप रणधीर ।
वीर पिता के वीर कुमार,
जेकर जश गावत संसार ।
कइले उ अंग्रेजन से रारि,
बंकजोगिनी में बसि के मारि।
तेइस बरिस कइले तब युद्ध,
वसना उनकर जीवन शुद्ध ।

हुस्सेपुर गढ़ छोड़िके, निर्जन वन में वास ।
छापा मारस युक्ति से, देसु फिरंगीन त्रास ।
गोविन्द राम के शासन, विहले तब अंग्रेज ।
उनका वध पर 'मीर' के मिलल काँट के सेज ।
ऊ ना बुझलन सिंह के, विहलन खोदि जगाई ।
राजा अपना घात में, गइले कहीं लुकाई ।

रिपु सैनिक लिहले गढ़ घेर,
गइल निकसि न परले फेर ।
राजमहल सुख गइल भुलाइ,
वन-झारन में तरु तर जाइ ।
घास-फूस में लोटे लोग,
बहरा पहरा हाथे बोंग ।

सोच बहुत लागे ना नींनि,
कइसे नों जमाल के बीनि ।
सोचत जतन बिचारत बाति,
गइल बीत तीन पहरा राति ।
पहर रात से रहल ना ढेर,
बोलले सब वीरन के टेर ।
जागऽ जागऽ, जागऽ लोग,
कर चढ़ाई के उतजोग ।
लोग बटूरि आइल तत्काल,
अस्त्र-शस्त्र निज लिहल सम्भाल ।
का आदेश ? कहीं सिरमौर,
हमनी के रउरे ले दौर ।
हाथन फरकत बा हथियार,
मन में बा उत्साह अपार ।
देत हुकुम जनि करीं अबेर,
पालन में ना होई देर ।
जइसे गिरी तरुवर पर गाज,
जइसे बयाँ-झुंड पर बाज ।
ओइसे जाइब छन में दौर,
लोकि लेबि जा अरि के चौर ।
तब नरेश के मुँह खुलल, कहले कुछो न देर ।
अबहीं तनिका दम धरीं, बाटे बहुत सबेर ।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कवि 'प्रथम क्रांतिकारी वीर' केकरा के कहत बा ?

(क) वीर कुंवर सिंह (ख) महाराणा प्रताप

(ग) फतेहशाही (घ) मंगल पांडेय

2. फतेहशाही अंग्रेजन से कतना दिन ले लड़ाई लड़ले ?

(क) तेइस बरिस ले (ख) पन्द्रह बरिस ले

(ग) पाँच बरिस ले (घ) पचीस साल तक ।

3. फतेहशाही कहवाँ के राजा रहले ?

(क) हुस्सेपुर (ख) बंकजोगिनी

(ग) काशी (घ) तमकुही

4. 'जमाल वध' खंडकाव्य केकर लिखल ह ?

(क) डा. रामविचार पांडेय (ख) कुलदीप नारायण 'झड़प'

(ग) प्रसिद्ध नारायण सिंह (घ) रामवृक्ष राय 'विधुर'

5. फतेहशाही का कवना बात के चिंता सतावत रहे कि रात के नीने ना लागे ?

(क) अंग्रेजी सेना गढ़ घेरे लेले रहे

(ख) राजमहल के सुख छिना गइल रहे

(ग) जमाल के कइसे मार गिरावल जाय

(घ) एह में से कवनो ना

6. फतेहशाही से अंग्रेज काहे भयभीत रहले स ?

(क) युक्तिपूर्वक छापामार युद्ध कइला से

(ख) गोविन्द राम का बाद मीर जमाल के वध कर देला से

(ग) बंकजोगिनी का वन में लुका गइला से

(घ) एह में से कवनो कारण से ना ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फतेहशाही के 'प्रथम क्रांतिकारी वीर' काहे कहल गइल बा ?
2. मीर जमाल का पहिले शासन के भार अंग्रेज केकरा के देले रहले स ?
3. मीर जमाल के शासन के भार मिलला के मिलल, 'कांट क सेज' काहे कहल बा ?
4. कवना चिंता-फिकिर में फतेहशाही के तीन पहर रात ले नीन ना पड़ल ?
5. रात का अंतिम पहर में राजा अपना सैनिकन से कऽ कहले ?
6. राजा फतेहशाही अपना सैनिकन से 'अबहीं तनिका दम भरीं' काहे कहत बाड़े ?
7. राजा का पुकार पर बहुराइल लोग के मन में उछाह काहे भरल रहे आ बाँह काहे फरकत रहे?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. महाराजा फतेहशाही अंग्रेजन के विरोध काहे कइले ?
2. मीर जमाल के वध काहे करे के पड़ल ?
3. कविता के सारांश लिखीं ।
4. 'बंकजोगिनी' आ 'हुस्सेपुर' का बारे में पाँच पंक्ति लिखीं ।

भाषा आ व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दन में भाववाचक संज्ञा बनाईं–

वीर, शुद्ध, निर्जन, क्रांतिकारी, युक्त ।

2. नीचे दिहल मुहावरा के अर्थ लिखीं–

रारि कइल, जस गावल, काँट के सेज मिलल, खोद के सिंह जगावल, फेर में ना पड़ल, नीनि ना लागल, मुँह खुलल, लोकि लिहल

परियोजना कार्य

1. आजादी का लड़ाई में भाग लेवे वाला केहू रउरा गाँव-जवार में भइल होखे त ओकरा बारे में पता करके जानकारी बटोरीं आ एगो निबंध लिखीं ।
2. जनपदीय आंदोलन के संबंध में जानकारी प्राप्त करीं।

शब्द-भंडार

नृप – राजा,

रणधीर – युद्ध में जे धीरज राखे,

कुमार – पुत्र, बेटा

रारि – झगड़ा, लड़ाई

गढ़ – महल,

युक्ति – उपाय

घात – धोखा देके वार कइल

लुकाइल – छिप गइल

रिपु – दुश्मन, बैरी

ढेर – ज्यादा

उतजोग – उपाय

तत्काल – तुरंत

सिरमौर – सबसे ऊपर

अबेर – देर

अरि – दुश्मन

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अध्याय : छव

एक पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा

विषय प्रवेश

डा० भीमराव अंबेडकर के जीवन प्रेरणा से भरल बा, उहाँ के जीवन यात्रा शून्य से शिखर पर पहुँचे के कथा कह रहल बा । ज्ञाने का बले उहाँ के बड़-बड़ लड़ाई लड़नी आ जीतबो कइनी । उहाँ के जीवनी संकट से ना घबड़ाये के सीखावता ।

JCSSA

भारत-रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर

भारत के इतिहास में डॉ. भीमराव अंबेडकर के नाँव कबो भुलावल नइखे जा सकत। इहाँ के भारतीय संविधान के जनक कहल जाला। दलित, शोषित आ वंचित वर्ग के सामाजिक सम्मान आ अधिकार दिलावे खातिर अंबेड़कर जी बहुते संघर्ष कइलीं।

इहाँ के जनम 14 अप्रैल 1891 के मध्यप्रदेश के महू नगर में भइल रहे। इहाँ के माई के नाँव श्रीमती भीमाबाई आ बाबूजी के नाँव श्री रामजीव राव मालोपी राव रहे। पिता जी सेना में सूबेदार मेजर रही आ, इहाँ के मूलतः महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिला के बासिन्दा रहीं।

अंबेडकर के प्रारंभिक शिक्षा सतारा मे भइल। आगे के शिक्षा मुम्बई मे प्राप्त कइलीं। आगे के शिक्षा पावे खातिर उहाँ के विदेश गइलीं। उहाँ के अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर आ इंग्लैंड के लंदन विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. के उपाधि प्राप्त कइलीं। लंदने से उहाँ के बैरिस्टर के शिक्षा पवलीं। ओह घड़ी के सामाजिक व्यवस्था भेदभावपूर्ण रहे। डा. अंबेडकर के डेग-डेग पर बाधा-विघ्न के सामना करे के पड़ल। पढ़ाई पूरा करे खातिर उहाँ के लगे रुपया-पइसा भी ना रहे। बाकिर एह सब से उहाँ के घबड़इनी ना। कहल बा कि जहाँ चाह उहाँ राह। बड़ौदा नरेश उहाँ के छात्रवृत्ति दिहलीं।

डा. अंबेडकर के असली ताकत उहाँ के ज्ञान रहे। एकरे बले उहाँ के पूरा दुनिया से आपन लोहा मनववलीं। बाकिर ई ज्ञान उहाँ के सहजे ना मिलल। एकरा के पावे खातिर तरह-तरह के कष्ट उठावे के पड़ल। उहाँ के कहनाम रहे कि शिक्षा एगो अइसन चाभी ह जवना से दुनिया के सभ ताला खुल जाला। उहाँ के शोषित-पिछड़ल लोग के हर हाल में शिक्षा प्राप्त करे के सलाह दिहलीं।

उहाँ के हिंदू धर्म के भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था से उबल रहीं। उहाँ के एह व्यवस्था में बदलाव चाहत रहीं। एह मुद्दा पर उहाँ के विचार महात्मा गाँधी से अहलदा रहे। डा. अंबेडकर के माँग पर सन् 1932 में ब्रिटिश सरकार अनुसूचित जाति के लोग खातिर पृथक निर्वाचक मंडल के घोषणा कइलस। एह में ई व्यवस्था रहे कि अनुसूचित जाति के लोग आपन प्रतिनिधि अपने वोट से करी। महात्मा गाँधी एह व्यवस्था के खिलाफ आमरण अनशन कइलीं। डा. अंबेडकर

महात्मा गाँधी के मान राखत पृथक निर्वाचक मंडल के जगे दोसर व्यवस्था पर सहमत हो गइलीं। एह दूनों महापुरुषन के बीच एगो समझौता भइल जवन 'पूना पैक्ट' के नाँव से जानल जाला।

देश आजाद भइला पर संविधान बनावे के काम शुरू भइल। एह काम खातिर एगो प्रारूप समिति के गठन भइल। बड़ा सोच विचार के बाद डा अंबेडकर के एह समिति के अध्यक्ष बनावल गइल। उहाँ के बड़ी परिश्रम, लगन आ सूझबूझ से एह जिम्मेवारी क निभवलीं। संविधान बनावे में उहाँ महान योगदान के देखिएके उहाँ के 'भारतीय संविधान के पितामह' कहल जाला।

उहाँ बड़हन विद्वान रहीं। उहाँ के कई गो किताब लिखलीं, जवना में प्रमुख बा-जाति का उच्छेद, शूद्र कौन ? कांग्रेस और गाँधी ने अछूतों के लिए क्या किया ? भगवान बुद्ध और उनका धम्म। उहाँ के 'मूक नायक' नाँव के एगो पत्रिका निकालत रहीं। उहाँ के आपन बात बड़ा तार्किक रूप से रखत रहीं जवना से विरोधियो लोग प्रभावित हो जात रहे।

तत्कालीन हिंदू धर्म के भेदभाव से उबिया के उहाँ का 14 नवम्बर, 1956 के बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिहलीं। उहाँ के संगे आउर लाखन अनुयायी लोग बौद्ध हो गइल। 6 दिसम्बर 1956 के अंबेडकर जी के निर्वाण हो गइल। उहाँ के मरला के बहुत दिन बाद सन् 1990 में भारत सरकार देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' के उपाधि से विभूषित कइलस। भारतीय समाज के समरस बनावे खातिर अंबेडकर जी जवन संघर्ष कइलीं आ भारतीय संविधान के निर्माण में योगदान दिहलीं–एह में उहाँ के सिद्धांत आ विचार आजो प्रेरक बा आ उहाँ के नाँव हमेशा अमर रही।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. भीमराव अंबेडकर के जनम कब भइल रहे ?

(क) 1884 में (ख) 1991 में

(ग) 1885 में (घ) 1917 में

2. अंबेडकर के पिता रामजीव राव मालोपी मूलतः कहवाँ के बाँसिन्दा रहीं ?

(क) मध्यप्रदेश के (ख) उत्तरप्रदेश के

(ग) महाराष्ट्र के (घ) गुजरात के

3. श्रीमती भीमाबाई अंबेडकर के के रहस ?

(क) मातारी (ख) बहिन

(ग) मौसी (घ) फुआ

4. अंबेडकर के बाबूजी सेना में का रहीं ?

(क) सूबेदार (ख) मेजर सूबेदार

(ग) हवलदार (घ) कैप्टन

5. अंबेडकर के प्रारंभिक शिक्षा कहँ भइल ?

(क) सतारा में (ख) पुणे में

(ग) मुम्बई में (घ) लखनऊ में

6. अंबेडकर का समय समाज कइसन रहे ?

(क) समरस (ख) भेदभावपूर्ण

(ग) उपद्रवी (घ) शोषित

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डा० अंबेडकर के प्रारंभिक शिक्षा लेवे में काहे दिक्कत होत रहे ?
2. डा० अंबेडकर के उच्च शिक्षा खातिर के मदद कइल ?
3. डा० शिक्षा का बारे में अंबेडकर के का कहनाम रहे ?

4. शोषित-वंचित लोग खातिर अम्बेडकर जी के का सलाह रहे ?

5. अनुसूचित जाति के लोग खातिर पृथक निर्वाचक मंडल के घोषणा कब भइल ?

6. 'पूना पैक्ट' में का रहे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अंबेडकर जी काहे बौद्ध बन गइली ?
2. अंबेडकर जी के संघर्ष भरल जीवनी अपना शब्दन में लिखी ।

व्याकरण

1. नीचे दिहल शब्दन से विशेषण बनाईं–

समाज, शिक्षा, बाधा, शोषण, सहयोग

परियोजना कार्य

1. अपना गाँव-जवार के केहू अइसन आदमी का बारे में लिखीं जे दलित समुदाय का हक खातिर संघर्ष कइले होखे ।
2. अपना क्षेत्र में घूम के दलित समुदाय के चिंतित करीं आ बतलाई कि ओमें शिक्षा के स्थिति एहघड़ी कइसन बा ?

शब्द-भंडार

डेग-डेग – कदम-कदम पर

बसिन्दा – मूल निवासी

अलहदा – अलग, फरके

उबियाइल – उबल

निर्वाण – बौद्ध धर्म के अनुसार मृत्यु